Topic - Advance Social Psychology

M.A Psychology
IInd sem
Paper - IV -

पूर्वधारणा (पूर्वाग्रह)
(Prejudice)

पूर्वधारणा या पूर्वाग्रह अंग्रेजी भाषा के Prejudice का हिन्दी अनुवाद है। Prejudice लैटिन भाषा के Prejudicum से बना है। Pre का अर्थ है पहले (Prior) और (judicium) का अर्थ है निर्णय (judgement)। इस दृष्टिकोण से पूर्वधारणा का शाब्दिक अर्थ हुआ पूर्वनिर्णय (Prejudgment) क्लिनबर्ग (Klineberg, 1966) ने इसी अर्थ में पूर्वधारणा की परिभाषा दी है कि - "पूर्वधारणा का तात्पर्य व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति पूर्व निर्णय, भाव या प्रतिक्रियाएं हैं, जो पूर्वनिर्धारित होने के कारण वास्तविक अनुभव पर आधारित नहीं होती है। पूर्वधारणा के संबंध में युंग (Young) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि " पूर्वधारणा एक व्यक्ति की अन्य व्यक्तियों के प्रति पूर्व निर्धारित अभिवृत्तियाँ या विचार है जो कि सांस्कृतिक मूल्यों और अभिवृत्तियों पर आधारित होते हैं।" सेकर्ड एवं बैकमैन (Secord and Backman, 1974) ने इसी अर्थ में पूर्वधारणा की परिभाषा दी है। उनके अपने शब्दों में - "पूर्वधारणा एक मनोवृति है जो व्यक्ति को किसी समूह या इसके अन्य सदस्यों के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल ढंग से सोचने, प्रत्यक्षीकरण करने, अनुभव करने तथा क्रिया करने के लिए पहले से ही तत्पर बना देती है। - चैपलिन (Chaplin, 1975) ने भी इसी विचार का समर्थन किया है और कहा है कि - "पूर्वधारणा एक साकारात्मक या नाकारात्मक मनोवृति है जो प्रर्याप्त प्रमाण के पहले से प्रति पादित रहती है और इसमें संवेदात्मक दृढ़ता (Emotional tenacity) पायी जाती है। ऑगबर्न महोदय ने पूर्वधारणा को परिभाषित करते हुए कहा है कि "पूर्वधारणाएं ऐसे अतिशीघ्र या एकमत से बनती है जो बिना परीक्षण किया हुआ होता है।"

इस प्रकार उपयुक्त परिभाषाओं को देखते हुए पूर्वधारणा की एक समुचित परिभाषा निम्न प्रकार से दी जा सकती है - "पूर्वधारणा एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति पहले से निर्धारित मनोवृत्ति या विचार है जो सांस्कृतिक मूल्यों और मनोवृत्तियों पर आधारित होती है।"

उपरवर्णित परिभाषाओं के विश्लेषण से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं —

(1) पूर्वधारणा एक ऐसा पूर्व निर्णय है जो तथ्यों पर आधारित नहीं होती है।

(2) पूर्वधारणा नकारात्मक या सकारात्मक दोनों प्रकार की होती है, लेकिन अधिकांश परिस्थितियों में यह नकारात्मक होती है।

(3) पूर्वधारणा में संवेगात्मक रंग पाया जाता है।

(4) पूर्वधारणा में अतिसामान्यीकरण (Over generalization) की विशेषता पाई जाती है। समूह या समुदाय के बहुत थोड़े से व्यक्तियों के अनुभव के आधार पर समूचे समूह या समुदाय के संबंध में सामान्यधारणा बना ली जाती है।

(5) पूर्वधारणा का प्रभाव व्यक्ति के चिंतन, भाव प्रत्यक्षीकरण एवं व्यवहार पर पड़ता है।

पूर्वधारणा के उत्पति के संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांत
(Different Psychological Theories of Prejudice)

(1) असामान्य व्यक्तित्व तथा पूर्वधारणाओं का निर्माण :— पूर्वधारणा का निर्माण असामान्य व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। मानसिक रूप से भी व्यक्ति रोगी होता है वह असामान्य एवं हिंसक व्यवहार पूर्वधारणाओं के आधार पर वर्गीकरण करके करने लगता है। उदाहरण के लिए एक गोरा व्यक्ति एक निग्रो की हत्या कर देता है। वह ऐसा इस लिए करता है कि उसकी नजरों में निग्रो नीच है। अतः उसकी जाति को संसार से समाप्त कर देना चाहिए। हम कभी अखबारों में इस प्रकार के समाचार देखते हैं कि गोरे जाति के व्यक्ति ने निग्रो पर हिंसात्मक हमला कर दिया। यह विचार जाति-पूर्वधारणा का द्योतक है।

(2) विफलता के भावना के कारण पूर्वधारणाओं की उत्पति :— कभी-कभी विफलता की भावना भी पूर्वधारणा को विकसित कर देती है। जैसे - एक गांव का किसान निर्धन है और बीमार बहुत धनी है। निर्धन किसान अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है। यह निर्धनता उसमें विफलता का भाव उत्पन्न करता है। इसका परिणाम यह होता है कि वे बीमार के प्रति पूर्वधारणा बना लेता है और उसे बनकर लूटपाट करना प्रारंभ कर देता है।

(3) सांस्कृतिक निषेध के कारण पूर्वधारणा की उत्पति :— सांस्कृतिक निषेध भी पूर्वधारणाओं की वृद्धि में सहायक होते हैं। दक्षिण अमेरिका में काली जाति का कोई पुरुष गोरी जाति की स्त्री से संबंध नहीं रख सकता। परिणाम (फल) यह होता है कि कभी-कभी काली जाति के व्यक्ति सांस्कृतिक निषेध तोड़ने के लिए गोरी जाति की युवती के साथ व्यभिचार करते हैं। इस बात की जानकारी यदि गोरी जाति के लोगों को होती है तो वह उसकी हत्या करने का प्रयास करता है।

(4) जटिल परिस्थितियों के कारण पूर्वधारणा की उत्पति :—

कभी-कभी समाज के सामने ऐसी भयंकर परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है जो उसके लिए काफी हानिकारक होती है। उसे उन परिस्थितियों से निकलने का कोई मार्ग नहीं मिलता। ऐसी दशा में पूर्वधारणा की उत्पति की सम्भावना बहुत अधिक होती हो जाती है। जैसे राशन की दूकान में जब लोगों को राशन नहीं मिल पाता तो वह प्रत्येक राशन विक्रेता को चोरबाजारी करनेवाला मान लेता है। इस कमी के लिए उसे दोषी ठहराता है।

(5) आत्मसम्मान और समाज से अनुकूलता के कारण पूर्वधारणाएँ →

पूर्वधारणा के निर्माण में आत्म सम्मान की भावना का भी महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति हमेशा अपने आत्म सम्मान को बनाये रखना चाहता है। वह अपने को दूसरों से उच्च प्रदर्शित करना चाहता है। जब वह प्रत्यक्ष रूप से ऐसा नहीं कर पाता तो अप्रत्यक्ष रूप से पूर्वधारणा द्वारा इनका प्रकाशन करता है। वह अपनी जाति या समूह को उच्च प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। उदाहरण स्वरूप आर्य लोग अपने को अनार्यों से उच्च प्रदर्शित करते थे। भारत के लोग कम विकसित देशों से अपने को उच्च प्रदर्शित करते हैं।

व्यक्ति समाज के विपरीत कार्य करना नहीं चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसे सामाजिक प्रमाणिकता मिल जाय। यही कारण है कि वह समाज के आदर्शों, रीति-रिवाजों अंधविश्वासों इत्यादि को ग्रहण कर लेता है। वह सीख लेता है कि शूद्रों को स्पर्श करना बुरा है, और ब्राह्मण को बालक को मांसभक्षण नहीं करना चाहिए। इन्हीं अंधविश्वासों के कारण इसकी पूर्वधारणा का निर्माण होता है।